६. अति सोहत स्याम जू

– *रसखान*

मानुष हौं तो वही 'रसखान', बसौं मिलि गोकुल गाँव के ग्वारन ।
जो पसु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन ।।
पाहन हौं तो वही गिरि को, जो धर्‍यो कर छत्र पुरंदर कारन ।
जो खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन ।।

धूरि भरे अति सोहत स्याम जू, तैसी बनी सिर सुंदर चोटी ।
खेलत खात फिरैं अँगना, पग पैंजनि बाजति, पीरी कछोटी ।।
वा छबि को 'रसखान' बिलोकत, वारत काम कला निधि कोटी ।
काग के भाग कहा कहिए, हरि हाथ सों लै गयो माखन रोटी ।।

सोहत है चँदवा सिर मोर को, तैसिय सुंदर पाग कसी है ।
वैसिय गोरज भाल बिराजत, जैसी हिये बनमाल लसी है ।।
'रसखान' बिलोकत बौरी भई, दृग मूँदि कै ग्वालि पुकार हँसी है ।
खोलि री घूँघट, खोलौं कहा, वह मूरति नैननि माँझ बसी है ।।

सेस, गनेस, महेस, दिनेस, सुरेसहु जाहि निरंतर गावैं ।
जाहि अनादि, अनंत, अखंड, अछेद, अभेद, सुबेद बतावैं ।।
नारद से सुक व्यास रटें, पचिहारे तऊ पुनि पार न पावैं ।।
ताहि अहीर की छोहरियाँ, छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं ।।

परिचय

जन्म : १५९० के लगभग, पिहानी
मृत्यु : मथुरा (उ.प्र.)
परिचय : रसखान जी का मूलनाम सैयद इब्राहिम था । आपकी अधिकांश रचनाएँ भगवान कृष्ण को समर्पित हैं । आपके काव्य में भक्ति, शृंगार रस की प्रधानता मिलती है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'प्रेमवाटिका' (दोहे) 'सुजान रसखान' (कवित्त, सवैया) आदि ।

पद्य संबंधी

सवैया : यह छंद का एक प्रकार है । इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में २२ से २६ वर्ण होते हैं ।

यहाँ चयनित सभी रचनाएँ सवैया छंद में हैं । इन सभी सवैयों में उनका कृष्ण प्रेम छलकता है । यहाँ पर रसखान जी ने कृष्ण के बालरूप, अपनी इच्छा और श्रीकृष्ण की व्यापकता का वर्णन किया है ।

शब्द संसार

मँझारन–मँझार क्रि.वि.(सं. दे.)= बीच में
पाहन पुं.सं.(दे.) = पत्थर
डारन स्त्री.सं.(हिं.दे.) = डाली
धूरि स्त्री.(दे.)= धूल
जू वि.(दे.) = जी
पीरी स्त्री.वि.(हिं.दे.) = पीले रंग की
कछोटी स्त्री.सं.(हिं.दे.)= कमर में लपेटी जाने वाली धोती
बिलोकत क्रि.(दे.)= देखना
वारत क्रि.(दे.)= निछावर करना
पाग स्त्री.सं.(हिं.दे.) = पगड़ी
भाल पुं.सं.(सं.)= मस्तक
हिय पुं.सं.(दे.)= हृदय
लसी क्रि.(दे.)= सुशोभित होना
दृग पुं.सं.(सं.)= आँख
पचिहारे क्रि.(दे.)= हार जाना
अहीर पुं.सं.(सं.) = ग्वाला, आभीर
छछिया सं.स्त्री.(दे.)= छाछ रखने का छोटा पात्र

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-**

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

वेदों में श्रीकृष्ण को कहा है

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

श्री कृष्ण की महिमा का निरंतर गायन करने वाले

----

(३) कवि यहाँ और यह बनकर रहना चाहता है -----

- ---
- ---
- ---
- ---

(४) अ) पद्य में उल्लिखित पक्षी

आ) कृष्ण द्वारा पहने हुए वस्त्र

----

(५) पद्य में इस अर्थ में आए शब्द :

१. शोभा देता है = ______
२. ग्वाल-बालाएँ = ______
३. गोरस देने वाली = ______
४. शुक मुनि = ______

(६) १. निम्न शब्दों के भिन्न-भिन्न अर्थ लिखिए :

चोटी = ---------, ---------

व्यास = ---------, ---------

२. शब्द समूह के लिए एक शब्द लिखिए :

१. जिसके कोई खंड नहीं होते - ....
२. छाछ रखने का छोटा पात्र - ....
३. जिसका कोई अंत नहीं होता - ....
४. जो सदैव चलता रहता है - ....

(७) कृदंत, तद्धित शब्दों के मूल शब्द पहचानकर लिखिए :

झगड़ालू, मुस्कान, सांस्कृतिक, रसीला, खिलाड़ी, कहानी, जगमगाहट, सुखी

कृदंत-मूलशब्द	तद्धित-मूलशब्द
______	______
______	______
______	______
______	______

CH85JS

(८) किसी एक पद का सरल अर्थ लिखिए ।